बी.एस.ओ.सी.-105 : राजनीतिक समाजशास्त्र
अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : BASOH
पाठ्यक्रम कोडः **BSOC-105**
सत्रीय कार्य कोड : **बी.एस.ओ.सी -105 /ए.एस.एस.टी./TMA/2026-27**
अधिकतम अंकः **100**

नोटः यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित हैं।

सत्रीय कार्य – I

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1. राजनीति के संदर्भ में शक्ति (Power) और प्राधिकार (Authority) की परिभाषा दीजिये । 20
2. परेटो के अनुसार शासक अभिजात वर्ग की दो श्रेणियाँ क्या हैं? चर्चा कीजिए। 20

सत्रीय कार्य – II

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3. शक्ति अभिजात (Power elites) कौन होते हैं? 10
4. नागरिकता (Citizenship) से आप का क्या मतलब हैं? चर्चा करें। 10
5. राज्य की उत्पत्ति के सिद्धांत क्या हैं? चर्चा करें। 10

सत्रीय कार्य – III

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6. प्राधिकार 06
7. सांस्कृतिक पूंजी 06
8. राष्ट्र 06
9. वैश्वीकरण (Globalization) 06
10. जैव-राजनीति (Bio-politics) 06

1. राजनीति के संदर्भ में शक्ति (Power) और प्राधिकार (Authority) की परिभाषा दीजिये।

उत्तर

प्रस्तावना

राजनीतिक समाजशास्त्र में शक्ति और प्राधिकार दो ऐसी मूल अवधारणाएँ हैं जिनकी सहायता से यह समझा जाता है कि समाज में निर्णय कौन लेता है, कौन उनका पालन करता है और व्यवस्था को वैधता कहाँ से प्राप्त होती है। राजनीति केवल सरकार और चुनाव तक सीमित नहीं है; परिवार, शिक्षण संस्थान, संगठन, स्थानीय समुदाय और आर्थिक संस्थाओं में भी शक्ति के संबंध काम करते हैं। शक्ति तथा प्राधिकार एक-दूसरे से जुड़े होने पर भी समानार्थी नहीं हैं। इनके बीच सबसे महत्त्वपूर्ण अंतर आदेश का पालन कराने की क्षमता और उस आदेश को उचित मानकर स्वीकार किए जाने की स्थिति का है।

शक्ति का अर्थ एवं परिभाषा

शक्ति (Power) का सामान्य अर्थ किसी व्यक्ति, समूह अथवा संस्था की वह क्षमता है जिसके द्वारा वह दूसरों के व्यवहार, संसाधनों, अवसरों तथा निर्णयों को प्रभावित कर सके। मैक्स वेबर के अनुसार सामाजिक संबंधों में प्रतिरोध के बावजूद अपनी इच्छा को लागू कर पाने की संभावना शक्ति कहलाती है। इस परिभाषा में विरोध और क्षमता दोनों प्रमुख हैं। शक्ति का प्रयोग आदेश देने, संसाधन वितरित करने, दबाव बनाने, प्रोत्साहन देने अथवा विचार और मान्यताएँ प्रभावित करने के द्वारा हो सकता है। उदाहरण के लिए, किसी संस्था का प्रबंधक वेतन तथा कार्य-वितरण से कर्मियों के व्यवहार को प्रभावित कर सकता है; वहीं कोई सामाजिक आंदोलन जनमत बदलकर सार्वजनिक नीति पर असर डाल सकता है।
शक्ति के कई स्रोत होते हैं। आर्थिक संपत्ति और रोजगार पर नियंत्रण आर्थिक शक्ति देते हैं। पुलिस, सेना तथा दंड देने की व्यवस्था बल-आधारित शक्ति प्रदान करती है। शिक्षा, विशेषज्ञता और सूचनाओं का नियंत्रण ज्ञान-संबंधी शक्ति का आधार बनता है। प्रतिष्ठा, धार्मिक विश्वास, भाषा तथा सांस्कृतिक प्रतीक भी लोगों की सहमति निर्मित करते हैं। संगठन और सामाजिक नेटवर्क बिखरे हुए